प्रातः सभा 25-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः आज है सत गुरुवार। बृहस्पत बृक्षपति डे। दिनों में भी कोई उत्तम दिन होते हैं ना। बृहस्पति को उत्तम दिन कहा जाता है। बृहस्पति अर्थात बृक्षपति डे। बृहस्पति दिन स्कूल वा कालेज में बैठते हैं। अभी तुम समझते होइस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीज रूप है बाप। और जो अकाल मूर्त है। अकाल मूर्त बाप के अकाल मूर्त बच्चे। कितना सहज है। मुश्किलात सिर्फ है याद की। याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। तुम पतित से पावन होते हो। इसमें ही माया इन्टर फेयर करती है। और कोई बात में लड़ाई नहीं होती। इस याद में ही होती है। बाप समझाते हैं तुम बच्चों पर अविनाशी बेहद की दशा है। एक होती है हद की दशा दूसरी होती है बेहद की। बाप है बृक्षपति। बृक्ष से पहले2 ब्राहमण निकलते हैं। बाप कहते हैं मैं बृक्षपति सत-चित आनन्द स्वरूप हूं। फिर महिमा गाते हैं ज्ञान का सागर, सुख का सागर ... तुम जानते हो सतयुग में सभी देवी-देवतायें सभी शान्ति का, पवित्रता का, सुख के सागर ही सागर हैं। भारत सुख-शांति पवित्रता सभी का सागर था। सम्पति का भी सागर था। इसको कहा जाता है विश्व में शान्ति। तुम हो ब्राहमण। वह है शुद्र बुधि। पाई-पैसे की बुधि है। वास्तव में तुम भी अकाल मूर्त हो। हरेक आत्मा अपने तख्त पर विराजमान है। यह सभी चैतन्य अकाल तख्त है। भृकुटि के बीच अकाल मूर्त विराजमान है। जिसको आत्मा भी कहा जाता है। सभी बच्चे हैं बाप के। बृक्षपति जो बीज रूप ज्ञान का सागर है उनको आना पड़े। पहले2 चाहिए ब्राहमण। प्रजापिताब्रह्मा का औलाद चाहिए ना। ब्राहमण तो मुख्य है ना। प्रजापिता ब्रह्मा के एडाप्टेड चिल्ड्रेन्स। तो जरूर ब्रह्मा भी चाहिए। यह ब्रह्मा-विष्णु शंकर भी है ना। तुम बच्चों को बहुत अच्छी रीत समझाते हैं। जैसे बाजोली खेलते हैं ना। इसका अर्थ भी समझाया है। बीज रूप है शिव बाबा। फिर है ब्रह्मा। ब्रह्मा द्वारा ब्राहमण रचे गये। इस समय तुम कहेंगे हम सो ब्राहमण हैं। फिर सो देवता बनेंगे .... सो फिरते फिरते जाते हैं। पहले2 हम शुद्र थे। शुद्र बुधि थे। अलप बुधि को शुद्र बुधि कहा जाता है। शुद्रबुधि से बाप पुरुषोत्तम बुधि बनाते हैं। हीरे जैसे पारस नाथ बुधि बनाते हैं। यह बाजोली का राज समझाते हैं। शिव बाबा भी हैप्रजापिता ब्रह्मा और एडाप्टेड बच्चे सामने बैठे हैं। शुद्र बुधि से तुम कितने विशाल बुधि बनते हो। ब्राहमण से फिर देवता बनेंगे। अभी तुम ईश्वरीय बुधि बनते हो। जो ईश्वर में गुण है वह तुमको वरसे में देते हैं। समझाने समय यह भूलो मत। बाप ज्ञान का सागर है नम्बरवन। उनको ज्ञानेश्वर कहा जाता है। ज्ञान सिखलाने वाला ईश्वर। ज्ञान से होती है सदगति। पतितों को पावन बनाते हैं ज्ञान और योग से। भारत का प्राचीन राजयोग भी मशहुर है। क्योंकि आयरन एज से गोल्डेन एज बनी थी। यह तो समझाया है योग दो प्रकार है। वह है हठयोग। और यह है राजयोग। वह हद का, यह है बेहद का। वह हद के सन्यासी। तुम हो बेहद के सन्यासी। वह घर-बार छोड़ते हैं, तुम सारी दुनिया को छोड़ते हो। अभी तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा के सन्तान। यह छोटा सा नया झाड़ है। तुम जानते हो हम पुराने से नये बन रहे हैं। सैपलिंग लग रहा है। बरोबर हम बाजोली खेलते हैं। हम सो ब्राहमण फिर हम सो देवता। सो अक्षर जरूर लगाना है। सिर्फ ब हम नहीं। हम सो शुद्र थे फिर हम सो ब्राहमण बने हैं, फिर हम सो देवता, क्षत्री, वैश्य शुद्र बनेंगे। यह बाजोली बिल्कु भूलनी न चाहिए। यह तो बिल्कुल ही सहज है। छोटे बच्चे भी समझा सकते हैं। हम 84 जन्म कैसे लेते हैं। सीढ़ी कैसे उतरते हैं। फिर सीढ़ी ब्राहमण बन चढ़ते हैं। ब्राहमण से देवता। अभी ब्राहमण बन बहुत भारी खजाना ले रहे हो। झोली भर रहे हो। ज्ञान सागर कोई शंकर को नहीं कहा जाता। वह झोली नहीं भरते हैं। यह तो चित्रकारों ने बना दिया है। शंकर की बात है नहीं। यह विष्णु और ब्रह्मा भी यहां के हैं। ल0ना0 को युगल रूप में ऊपर दिखाया है। यह है ब्रह्मा का अन्तिम जन्म। पहले2 यह विष्णु था। 8जन्म। 2जन्म, फिर 63 जन्म लिया। फिर आकर यह बना है। इनका नाम मैं ने ब्रह्मा रखा है। सभी का नाम बदल दिया। क्योंकि सन्यास किया ना। शुद्र से ब्राहमणबने तो नाम बदल दिया। बाप ने बहुत ही रमणिक नाम रखे थे। तो अभी तुम समझते हो, देखते

हो बृक्षपति इस रथ पर बैठा है। उनका यह अकाल तख्त है। उनकाभी तो इनकाभी है। इस तख्त का लोन लेते हैं। उनको अपना तख्त तो मिलतानहीं। कहते हैं मैं इस रथ में विराजमान होता हूं। फिर जो मुझे नहीं जानते हैंउनको अपना पहचान देता हूं, मैं तुम्हारा बाप हूं। फिर मैं जन्म-मरण में नहीं आता हूं। तुम आते ही नहीं हो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान कौन बनावेंगे? बनाने वाला तो चाहिए ना। इसलिए मेरा ऐसा पार्ट है। मुझे बुलाते भी हो हे पतित पावनआओ। निराकार शिव बाबा को आत्मायें पुकारती हैं। क्योंकि आत्मायें दुःखी हैं। भारतवासी आत्मायें खास बुलाती हैं कि आकर पतितों को पावन बनाओ। सतयुग में तुम बहुत ही पवित्र सुखी थे। कब भी पुकारते नहीं थे। तो बाप खुद कहते हैं तुमको सुखी बनाकर फिर मैं वानप्रस्त में बैठ जाता हूं। वहां मेरी दरकार ही नहीं रहती। भक्ति मार्ग में मेरा पार्ट है। फिर आधा कल्प मेरा पार्ट ही नहीं। यह तो बिल्कुल सहज है। इसमें किसको प्रश्न उठ नहीं सकता। गायन भी है दुःख में सिमरणसब करे ... सतयुग त्रेता में भक्ति मार्ग होना ही नहीं। ज्ञान मार्ग भी नहीं कहेंगे। ज्ञान मिलता ही है संगम पर। जिससे तुम 2' जन्म प्रारब्ध पाते हो। नम्बरवार पास होते हैं। फेल भी होते हैं। रामचन्द्र को फेल कहेंगे। क्योंकि माया पर जीत नहीं पहन सके। तुम्हारी भी युद्ध चल रही है। तुम देखते हो जिस रथ पर बाप बिराजमान हैवह तो जीत ही लेंगे। जैसे कुमारका है, फलानी है जरूर जीत पायेंगे। बहुतों का आप समान बनाते हैं। तो तुम बच्चों को यह बुधि में रखना है यह बाजोली है। बच्चे भी समझ सकते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं बच्चों को भी सिखलाओ। उनका भी बाप से वरसा लेने का है। जास्ती बात तो है नहीं। थोड़ा भी इस ज्ञान को न जानने से ज्ञान का विनाश नहीं होता। स्वर्ग में तो जरूर आ जावेंगे। तुम ब्राहमण कुल से सूर्यवंशी चन्द्रवंशी बनते हो। जैसे क्राईस्ट का स्थापन किया हुआ क्रिश्चन धर्मकितना बड़ा है। यह तो सब से बड़ा धर्म है। पहले2 आदी सनातन देवी-देवता धर्म था। दो युग चलता है। तो जरूर उनकी संख्या भी बड़ी होनी चाहिए। परन्तु हिन्दु कहला दिया है। देवताओं की संख्या दिखलाते ही नहीं। कहते भी हैं 33करोड़ देवतायें। फिर हिन्दु क्यों कहते। माया ने बुधि बिल्कुल ही मार डाली है तो यह हाल हो गया है। बाप कहते हैं माया को जीतना कोई कठीन बात नहीं है। हर कल्प तुम जीत पहनते हो। सेना हो ना। बाप मिला है इन 5विकारों रूपी रावण पर जीत पहनाने। तुम पर अभी बृहस्पत की दशा है। भारत पर ही दशा आती है। अभी है राहु की दशा। बाप बृक्षपति आते हैं तो जरूर भारत पर ही बृक्षपति की दशा बैठेंगी। इसमें सभी कुछ आ जाता है। तुम बच्चे जानते हो हमको निरोगी काया मिलती है। वहां तो मृत्यु का नाम ही नहीं होता। अमरलोक है ना। ऐसे नहीं कहेंगे फलाना मरा। मरने का नाम नहीं। एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। शरीर छोड़ने और मिलने पर खुशी ही रहती है। गम का नाम नहीं। तुम अभी अभी बृहस्पत की दशा है। सभी पर तो बृहस्पत की दशा हो न सके। स्कूल में भी कोई पास होते हैं कोई नापास। यह भी पाठशाला है। तुम कहेंगे हम राजयोग पढ़ते हैं। सिखलाने वाला कौन है? बेहद का बाप।

तो कितनी खुशी होनी चाहिए। इसमें कोई कोई बात नहीं। पवित्रता की है मुख्य बात। पतित पावन परमपिता को ही आकर सभी को पतितों को पावन बनाना पड़ता है। कैसे यह कोई नहीं जानते। लिखा हुआ भी है हे बच्चों देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ मामेकं याद करो। गीता के अक्षर हैं। यह गीता का एपीसुड चल रहा है। उनमें भी मनुष्यों ने अग्रम बग्रम कर दिया है। आटे में नून कुछ है। बाकी तो सभी हैं झूठ। कितना झूठ बनते गये हैं। इसलिए नाम ही है झूठ खण्ड। सच्च खण्ड झू० खण्ड यहभारत का ही नाम है। भारतवासियों के लिए ही बाजोली है। कितनी सहज बात है। जो बच्चा भी समझ जाये। फिर भी भूलते क्यों हो। भक्ति मार्ग में भी याद करते थे। कहते थे बाबा आप जब आवेंगे तो हम आप के ही बनेंगे। दूसरा न कोई। हम आप के बन आप से पूरा वरसा लेंगे। बाप का बनते ही हैं वरसा लेने के लिए। एडाप्टेड होते हैं। वह जानते हैं बाप से हमको क्या मिलेगा। तुम भी एडाप्ट हुये ना। तुम जानते हो हम बाप से विश्व की बादशाही बेहद का वरसा लेंगे। इनमें कोई ममत्व नहीं रखेंगे। समझो किसको लौकिक बाप भी है। उनके पास क्या होगा, कर के लाख देह होगा। यह बेहद का बाप को जानते क्या देते हैं। आधा कल्प तक ही होते हैं

डेढ़ होगा। यह बेहद का बाप तुमको क्या देते हैं। आधा कल्प तुम झूठी कथाएं सुनते आये हो। अभी सच्चे बाप सेतुम सच्ची कथा सुनते हो तो ऐसे बाप को याद करना चाहिए ना। ध्यान से सुनना चाहिए। हम सो का अर्थ भी समझाना है। वह तो कह देते आत्मा सो परमात्मा परमात्मा सो आत्मा। यह 84 जन्मों की कहानी तो कोई बता न सके। लाखों वर्ष कह करकितनी कथाएं बना दी है। बाप के लिए कह देते कुत्ते बिल्ले में हैं। बाप की ग्लानी करते हैं ना। यह भी ड्रामा में नूंध है। कोई पर दोष रख नहीं रखते हैं। ड्रामा का राज समझाते हैं। ड्रामा ही ऐसे बना हुआ है। तुम ऐसे बाजोली बोलते हो। तुमको जो बाप ज्ञान से देवता बनाते हैं तुम फिर उनको ही गालियां देने लग पड़ते हो। यह भी ड्रामा बना हुआ है। मैं फिर आकर तुम पर भी उपकार करताहूं। जानता हूं तुम्हारा दोष नहीं है। यह खेल है। कहानी तुमको समझाता हूं। यह है सच्ची2 कथा जिससे जिससे तुम देवता बनते हो। भक्ति मार्ग में फिर ढेर कथाएं बना दी है। एमआबजेक्ट कुछ है नहीं। फालोअर बैठकर सुनतेहैं। समझते कुछ नहीं हैं। वह सब है ही गिरने के लिए। उस पाठशाला में भी दिया पढ़ते हैं। फिर भी शरीर निर्वाह लिए एम तो है। यह पंडितलोग अपने शरीर निर्वाह लिए बैठ कथा सुनाते हैं। उनके आगे पैसे रखते जाते हैं। प्राप्तीकुछ भी नहीं। सब पैसे आद तुम्हारे व्यर्थ जाते है। तुमको तो रत्न मिलते हैं। जिससे तुम नई सृष्टि के मालिक बनते हो। वहां हर चीजनई मिलेगी। नई दुनिया में सभी कुछ नया होगा। हीरे जवाहरात सब नये होंगे। अब बाप समझाते हैं औरसभी बात छोड़ो। बाजोली याद करो। फकीर लोग भी बाजोली खाते, तीर्थो पर जाते हैं। कोई पैदल भी जाते हैं। अभी तो मोटरों एरोपैलन भी निकल पड़े हैं। गरीब तो उन में जा न सके। कोई बहुत सिधत होते है। तो पदैल भी चले जाते हैं। दिन प्रति दिन सांयस से सुख निकलता जाता है। यह है अलप काल का सुख। गिरते हैं तो कितनानुकसान हो जाता है। इन चीजों में सुख है अलप काल के लिए। बाकी फाईनलमौत भरा हुआ है। वह सांयस तुम्हारा सायलेन्स। बाप को याद करने से सभी रोग खतम हो जाते हैं। निरोगी बन जाते हैं। अभी तुम समझते हो हम सतयुग में एवर हेल्दी एवर वेल्दी थे। 84 का चक्र है ना। यह फिरता ही रहता है। बाप एक ही बार आकर समझाते हैं। तुम ने मेरी ग्लानी बहुत की है। कुत्ते बिल्ले-ठिकर भितर में मुझे ठोक दिया है। राम की भी ग्लानी कृष्ण की भी ग्लानी। अपन को चमाट मारी है। ग्लानी करते2 तुमशुद्र बुधि बन पड़े हो। ऊंच ते ऊंच भगवान, उनको फिर ठिक्कर-भितर में कहना कितनी ग्लानी है। सिक्ख लोग भी कहते हैं जप साहब को तो सुख मिले। अर्थात मनमनाभव। अक्षर ही दो हैं। फिर बाकी जास्ती माथा मारने कीदरकार ही नहीं। यहभी बाप आकर समझाते हैं। अभी तुम समझते हो साहब को याद करने से 2। जन्म तुमको सुख मिलते हैं। वह भी उनका रास्ता बताते हैं परन्तु पूरा रास्ता तो जानते हो नहीं। सिमर2 सुख पाओ ... तुम बच्चे जानते होबराबर सतयुग में बिमारी आद दुःख की कोई भी बात नहीं होती। यह तो कामन बात है। उनको सतयुग गोल्डेन एज कहा जाता है। इनको कलियुग आयरन एज कहा जाता है। सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। फिर गोल्डेन एज बनेंगे। समझानी कितनी अच्छी है। बाजोली है अभीतुम ब्राहमण हो। फिर देवता बनेंगे। यह बातें तुम भूल जाते हो। बाजोली याद हो तो भी साराज्ञान याद है। हम अभी ब्राहमण है। बाबाने कहा है मुझे याद करो तो पाप कट जावेंगे। फिर तुम देवता बन जावेंगे। ऐसे बाप को याद कर रात को सो जाना चाहिए। फिर भी कहते हैं बाबा भूल जाते हैं। माया घड़ी2 भूला देती है। लड़ाई है तुम्हारी माया के साथ। फिर आधा कल्प तुम इन पर राज्य करते हो। बात तो बहुत ही सह ज बताते हैं। नाम ही है सहज ज्ञान। सहज याद। बाप को याद करो। क्या तकलीफ देते हैं। भक्ति मार्ग में तो तुम ने बहुत ही तकलीफ्ली है। दीदार के लिए। काशी करवट खाई है। हां निश्चय बुधि होकरकरते हैं तो उनके विकर्म विनाश हो जाते हैं। फिर नये सिरे शुरु होगाहिसाब-किताब। बाकी मेरे पास नहीं आते हैं। मेरीयाद से विकर्म विनाश होनी है न कि जीवघात से। मेरे पास तो कोई भी आते नहीं। कितनी सहज बात है। यह बाजोली तो तुम बुढ़ियों को भी याद रहनी चाहिए। बच्चों को भी याद रहनी चाहिए। अच्छा मीठे2 बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।